आस्था के सैलाब में बहा भावनाओं का ज्वार

श्रद्धांजलि के लिए आये देश-विदेश से हजारों लोग

आबू रोड, 25 अगस्त, निसं। देश-विदेश से आये हजारों लोगों ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की तृतीय पुण्य तिथि श्रद्धापूर्वक मनायी गयी। इस अवसर पर आस्था का सैलाब उमड़ पड़ा। विश्व बन्धुत्व दिवस के रूप में मनायी जा रही पुण्य तिथि पर लोग घंटों कतार बद्ध होकर समाधि स्थल पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रातः काल से ही हजारों का समूह उनके यादों में खोया रहा। ब्रह्ममुहुर्त्त से ही ध्यान साधना में लोग लवलीन रहे। इसके पश्चात संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी रतनमोहिनी, संस्था के महासचिव ब्र. कु. निर्वेर, अतिरिक्त महासचिव ब्र. कु. बृजमोहन सहित संस्था के मीडिया प्रवक्ता ब्र. कु. करूणा, संस्था के कार्यकारी सचिव ब्र. कु. मृत्युंजय, ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा ब्र0 कु0 मोहिनी, ईशू दादी, कार्यक्रम आयोजिका ब्र0 कु0 मुन्नी, दिल्ली ओम शांति रीट्रिट सेन्टर की निदेशिका ब्र0 कु0 आशा सहित अमेरिकी सेवाकेन्द्रों की निदेशिका न्यूयार्क से आयी ब्र0 कु0 मोहिनी, रूस सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्र0 कु0 चक्रधारी आदि ने दादीजी के समाधि स्थल पर कुछ समय मौन रहकर तथा पुष्प अर्पित कर श्रद्धापूर्वक श्रद्धांजलि दी।

श्रद्धांजलि के पश्चात उपस्थित सभा को सम्बोधित करती हुई संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा कि दादीजी का जीवन सदैव दूसरों के लिए था। उनके अन्दर वे सभी मूल्य मौजूद थे जिससे व्यक्ति का व्यक्तित्व का देवत्व का प्रतिनिधित्व करता है। उनके सान्निध्य में हजारों लोगों ने अपने जीवन को मूल्यनिष्ठ बनाया। उनके कुशल नेतृत्व में संस्था ने ऊंचाईयों को प्राप्त करते हुए विश्व के कोने-कोने में भारतीय ध्वज फहराया। इस अवसर पर उपस्थित अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका हृदयमोहिनी ने उनके साथ के अनुभव को साझा करते हुए कहा कि उनके हर कर्म में मूल्यों की सीख थी। जिससे व्यक्ति सहज ही जीवन मूल्यों को आत्मसात कर लेता था। ऐसी महान विभूति की गाथा युगों-युगों तक जीवित रहेगी। इसके साथ ही संस्था के महासचिव ब्र0 कु0 निर्वेर सहित सभी वरिष्ठ अधिकारियों ने भी सम्बोधित किया।

फूलो सें नहा उठा प्रकाश स्तम्भः दादी की समाधि स्थल को फूलों और विजली की सजावट एवं सुन्दर कलाकृतियों से सजाया गया। इससे उसकी सुन्दरता देखते ही बनती थी। लोगों की भारी भीड़ को देखते हुए नियंत्रण की पूरी व्यवस्था की गयी थी।

ब्रह्मलोक में तब्दील हुआ शांतिवनः हजारों की संख्या होने के बावजूद भी पूरा शांतिवन परिसर शांति की छावनी में तब्दील हो गया था। लोगों ने मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि देकर उनके संकल्पों को पूरा करने का संकल्प लिया।

पर्यावरण संरक्षण के लिए लगाये गये पौधेः श्रद्धांजलि सभा के पश्चात संस्था के तपोवन परिसर में पर्यावरण की रक्षा अर्थ पौधे लगाये गये। इस अवसर पर पूरे देश भर में पैसठ हजार पौधें लगाये गये।

फोटो, 25 एबीआरओपी0 1, 2, 3, 4, 5, प्रकाश स्तम्भ पर श्रद्धांजलि अर्पित करती संस्था प्रमुख दादी जानकी तथा अन्य। पौध रोपण करती दादी जानकी, दादी हृदयमोहिनी तथा अन्य। श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित भारी भीड़।